बोधगम्यता
(द्विभाषिक)
(भाग 1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, +91-8130392354, 56, 57, 59

Web: www.drishtiias.com
E-mail : drishtiacademy@gmail.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

दार्शनिक *(Philosophical)*

Part-I

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

What is a dilemma? It is not clear at first sight that the term 'ethical dilemma' picks out a class of situations which all share the same common characteristics. So far we have offered a negative criterion: a moral dilemma is different from a merely difficult decision. In a dilemma, the difficulty arises from the very nature of the situation with which we are faced rather than our mere lack of wisdom or ethical knowledge.

It is true that, in ordinary speech, we are inclined to use the term 'dilemma' for any decision where we are uncertain which of two alternatives we should choose; in other words, as synonymous for a 'difficult decision'. However, as we have seen, what is problematic to one person may be much clearer to another person who has stronger moral perceptions or insight. If someone insists on calling every difficult decision a 'dilemma', then they still need a word for the variety of 'dilemma' which does not refer to something merely subjective in the mind of the agent, but rather denotes an objectively existing situation in the world. In the ideal example of a dilemma, there is an irresistable case for doing A, and also an irresistable case for doing B. But it is logically impossible to do both A and B. It follows that either one case can after all be resisted, or both can. To assert that both cases are (truly) irresistable would imply the existence of a irresistable case – combining the cases for A and for B – for seeking to do what is logically impossible: an absurdity.

It is fair to say that the majority of cases of moral reasoning are not like this. Often, when we face a tough decision, we weigh the relative strength of the

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इनके नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

दुविधा क्या है? प्रथम दृष्टया यह स्पष्ट नहीं होता है कि "नैतिक दुविधा" शब्दावली एक ही तरह की कुछ ऐसी परिस्थितियों की पहचान करती है, जिनकी विशेषताएँ एक समान होती हैं। अब तक हम एक नकारात्मक कसौटी अपनाते आए हैं: नैतिक दुविधा एक महज कठिन निर्णय से भिन्न है। दुविधा की स्थिति में कठिनाई परिस्थिति की वास्तविक प्रकृति से उत्पन्न होती है, और ज्ञान अथवा नैतिक ज्ञान की कमी मात्र के चलते हमें इसका सामना करना पड़ता है।

यह सत्य है कि, आम बोलचाल में हमारा रुझान दुविधा शब्दावली को किसी भी ऐसे निर्णय के लिए प्रयोग करने के प्रति होता है, जहाँ हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं होते हैं कि दो विकल्पों में से किसका चुनाव करना है; दूसरे शब्दों में यह 'कठिन निर्णय' का समानार्थी प्रतीत होती है। जबकि, जैसा कि हम देखते हैं कि किसी एक व्यक्ति के लिए जो जटिल है, वही किसी अन्य व्यक्ति, जिसका नैतिक बोध अधिक मजबूत है, के लिए अधिक स्पष्ट एवं आसान हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति किसी कठिन निर्णय को 'दुविधा' मानने पर बल देता है, तो ऐसे लोगों को दुविधा की विविधता के लिए एक ऐसे शब्द की आवश्यकता होती है, जो उस व्यक्ति के अपने दिमाग की उपज न हो, बल्कि समाज में किसी वास्तविक स्थिति के लिए व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने वाला शब्द हो। दुविधा के एक आदर्श उदाहरण के रूप में, एक कार्य A को करने का अनियंत्रित प्रकृति का मामला है, तो दूसरा कार्य B को करने का भी एक अनियंत्रित प्रकृति का मामला है। लेकिन तार्किक रूप से A और B दोनों को ही करना असंभव है। इससे यह बात निकलकर आती है कि या तो किसी एक कार्य को रोका जा सकता है, अथवा दोनों को। यह मानना कि दोनों ही मामले (वास्तव में) अनियंत्रित प्रकृति के हैं, इसका मतलब है कि कोई एक कार्य तो अनियंत्रित प्रकृति का है- A और B दोनों ही मामलों को एक साथ रखकर यह पता करना कि तार्किक रूप से क्या असंभव है: बेवकूफी है।

यह कहना सही है कि नैतिक तर्क-वितर्क के अधिकांश मामले इस तरह के नहीं होते हैं। प्राय:, जब कभी हम किसी कठिन निर्णय का सामना करते हैं, तो हम A और B दोनों ही मामलों की सापेक्षिक प्रभावशीलता को मापते हैं। कार्य A

सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक *(Socio-Economic and Cultural)*

Part-I

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

Nearly 10 percent of the world's economic resources are devoted to health care. But why do certain countries devote more resources to public health? Why are some countries better than others at achieving tangible health outcomes using the same level of economic resources? In this preliminary investigation, we use new data and measures from the World Health Organization (WHO) to examine cross-national variation first in the level of public and private expenditures on health, and then in the level of achievement of health outcomes. We find that autocracy, income inequality, ethnic heterogeneity, and persistent international hostilities significantly depress the amount of public resources allocated to health care. We also find that while private expenditures tend to be higher in unequal and heterogeneous societies, total health expenditures still fall far short of those in countries with similar income levels but that are more equal and homogenous. We further find, all other things equal, that countries that are rapidly urbanizing or have experienced a civil war tend to have poorer health.

The health of humanity varies enormously: by genetic endowment, environmental conditions, and access to health care; by age, gender, income level, and country Some people live long healthy lives in peace and affluence; many others' lives are briefer and burdened by major disabilities from disease or injury, "Country" is itself a catch-all of macro-influences, including type of political regime, decisions to devote public and private resources to health, the distribution as well as the level of income within the country, urbanization, the privileged or unempowered position of racial, linguistic, or religious groups in the country, and the state's experience of violent civil conflict or military threats from neighboring states.

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

विश्व के लगभग 10 प्रतिशत आर्थिक संसाधन स्वास्थ्य संबंधी देखरेख के लिए समर्पित हैं। लेकिन कुछ देश सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए अधिक संसाधनों का उपयोग क्यों करते हैं? समान स्तर के संसाधनों का उपयोग करके कुछ देश अन्य की अपेक्षा बेहतर स्वास्थ्य परिणाम क्यों अर्जित करते हैं? इस प्राथमिक जाँच-पड़ताल में, विभिन्न देशों के बीच स्वास्थ्य पर सार्वजनिक एवं निजी व्यय के स्तर में, और उनके द्वारा अर्जित स्वास्थ्य परिणामों के स्तर में विद्यमान अंतर का परीक्षण करने के लिए हम विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के नए आँकड़ों एवं मापदण्डों का प्रयोग करेंगे। हम पाते हैं कि निरंकुशता, नृजातीय विविधता और नियमित अंतर्राष्ट्रीय युद्धस्थिति स्वास्थ्य के लिए सार्वजनकि संसाधनों के आवंटन की मात्रा को हतोत्साहित करते हैं। हम यह भी देखते हैं कि असमान एवं विविधतापूर्ण समाजों में निजी व्यय अधिक होता है, और इन देशों के समान आय स्तर वाले लेकिन अधिक समानतापूर्ण देशों की अपेक्षा इन देशों का कुल स्वास्थ्य व्यय बहुत कम होता है। इसके अतिरिक्त हम पाते हैं कि सभी बातें समान रहते हुए भी, ऐसे देश जहाँ तेजी से औद्योगीकरण हो रहा हो अथवा वहाँ कभी गृह युद्ध हुआ हो, उनका स्वास्थ्य का स्तर कमजोर होता है।

आनुवंशिक वृत्ति, पर्यावरणीय दशाओं, और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच, इसके अलावा आयु, लिंग, आय स्तर और देश के आधार पर मानव स्वास्थ्य में अत्यधिक अंतर देखने को मिलता है। कुछ लोग शांतिपूर्वक दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन जीते हैं; जबकि बहुत से लोग बीमारी अथवा चोट की वजह से हुई अक्षमता के चलते अत्यंत छोटी एवं बोझिल जिंदगी जीते हैं। देश स्वयं ही स्थूल प्रभावों को समेटे हुए होता है, जिनमें राजनीतिक शासन, स्वास्थ्य के लिए सार्वजनिक एवं निजी संसाधनों के आवंटन का निर्णय, देश में आय के वितरण के साथ-साथ उसका स्तर, नगरीकरण, देश में प्रजातीय, भाषाई, अथवा धार्मिक समूहों की विशेषाधिकार प्राप्त अथवा नि:शक्त स्थिति तथा देश में हुए हिंसक नागरिक संघर्ष अथवा पड़ोसी राज्यों से सैन्य खतरे शामिल हैं। इनमें से कुछ प्रभाव ऐसे हैं जिनसे लोक स्वास्थ्य विशेषज्ञ परिचित होते हैं और ये